राजेश्वरी

मता खरे

राजेश्वरी

लेखिका

ममता खरे

आवरण एवं चित्रांकन

शंकर नायक

प्रकाशक

सुरेन्द्रकुमार एण्ड सन्ज़

30/21ए 22ए गली नं 9 विश्वास नगर

शाहदरा दिल्ली 110032

ISBN : 81-7882-029-3

प्रकाशक :

सुरेन्द्रकुमार एण्ड सन्ज

30/21ए-22ए, गली नं. 9

विश्वास नगर, शाहदरा

दिल्ली-110032

मूल्य :

35.00 रुपये

संस्करण :

सन् 2003

आवरण :

शंकर नायक

शब्द संयोजन :

एस. के. कम्प्यूटर्स

दिल्ली-110032

मुद्रक :

एस. एन. प्रिंटर्स

दिल्ली-110032

राजेश्वरी

में भीखू के पास चार-पांच बीघा जमीन थी पर
पालन, बच्चों की पढ़ाई, साल भर गुजर-बसर
से हो पाता था। भीखू का बड़ा परिवार था,
और छोटे तीन भाई जो पढ़ रहे थे। पत्नी
व साल की बेटी के अलावा दो ब्याहता बहनें
अक्सर ससुराल से आ जाती थीं और दो-एक

महीने रहकर जाती थी

दिनभर खेत पर वह अकेला जूझा करता, बाप भी कभी-कभी पहुंच जाता था पर दमे के कारण मदद नहीं कर पाता था। कमला सेठ, मुखिया वगैरह के यहां झाड़ने-बीनने का काम करके चार पैसे पा जाती थी।

बड़े प्यार से सबने भीखू की बेटी का नाम रखा था राजेश्वरी। बुलाते थे रज्जो। बड़ी सुंदर, गोरी चिट्टी। इसी उम्र में समझदार भी थी। पर भीखू अभी उसे स्कूल नहीं भेज सका था। उसके पास पैसे ही नहीं थे। जब जब कमला कहती भीखू यही कहता।

खुद भीखू अनपढ़ था। उसका बाप कहता था, "किसान के छोरे को पढ़ने की क्या जरूरत ? पेट पालन के लिए मेहनत मजदूरी कर।" आज से पचीस साल पहले वह बाप का विरोध नहीं कर सका था पर रोया बहुत था। अब उसे शिक्षा का महत्व मालूम हो गया है तभी तो भाइयों को पढ़ने शहर भेज रहा है।

बद्किस्मती से गांव में एक भी स्कूल नहीं था। सारे बच्चे शहर पढ़ने जाते थे। जो नहीं जा सकते थे वे दिन भर खेलते फिरते थे या मां-बाप के साथ काम करते थे।

मुखिया तथा अन्य अमीरों के बच्चे, सेठ चिंतामणी के बच्चों के साथ उनकी मोटर से शहर पढ़ने जाते थे। और बाकी पढ़ने वाले लड़के पैदल या साइकिलों से जाते थे। लड़कियों की पढ़ाई का तो प्रश्न ही नहीं उठता था। ऐसे में कमला का रज्जो को पढ़ाने की बात करना सबको हास्यकर ही लगता था।

इधर तीन-चार साल पहले एक दवाखाना खुल गया था गांव में। सेठ चिंतामणी ने अपनी मां की याद में दवाखाना खोला था। एक डॉक्टर थे—डॉक्टर किशोर। बड़े ही उत्साही और भले। छोटा-सा दवाखाना था। और उसी के पास एक झोंपड़ी उनके रहने के लिए बनवा दी थी सेठ ने। अपने माता-पिता के साथ डॉक्टर उसी में रहते जरूर थे पर उनका सारा दिन दवा का बैग उठाए घर-घर चक्कर काटने में ही बीत जाता था। रोगी की खूब सेवा करते थे। उन्हें थोड़े ही दिनों में गांव वालों के नाम तक याद हो गए थे।

गर्मी के दिन थे। भीखू मुखिया के खेत पर काम कर रहा था कि अचानक उसकी तबीयत खराब हो गई। बार-बार उल्टियां होने लगीं तो वह सुस्त पड़ गया। एक सायेदार पेड़ के तने से टिककर बैठ गया। उसने चारों तरफ नजर दौड़ाई, कोई नहीं दिखाई दिया। मदद पाने की उम्मीद छोड़कर उसने आंखें बंद कर लीं।

तभी राजेश्वरी खाना लेकर आई। दूर से ही चिल्लाती चली आ रही थी, "बापू...आज मैं मट्ठा रोटी लाई हूं। बापू हाथ-मुंह धो ले...", पास पहुंचकर भीखू को चुपचाप बैठा देख वह बोली, "बापू, तू सुस्त क्यों है ? क्या बात है ?"

बड़ी मुश्किल से आंख खोलकर भीखू बोला, "मेरी तबीयत ठीक नहीं...जरा पानी दे..."

पानी पीते ही भीखू को उल्टी हो गई। उससे बैठा नहीं गया, वहीं लेट गया वह। राजेश्वरी डर गई, बापू को अचानक क्या हो गया ? उसने चारों तरफ देखा सब खाना खाने गए

ा। खेतों पर कोई नहीं था।

तभी राजेश्वरी को याद आया कि उसने डॉक्टर किशोर को सेठजी के घर जाते देखा था। वह बोली, "बापू तू ऐसे ही लेटे रहना, मैं अभी आई।" राजेश्वरी दौड़ती हुई चली गई।

जब वह डॉक्टर किशोर के साथ लौटी भीखू की हालत बहुत

ो अब वह कराह रहा था। डाक्टर ने नब्ज
सूई लगाई फिर थोड़ी सी जगह साफ कर भीखू
दिया।

बापू को क्या हुआ है ?"

कर, जल्दी ठीक हो जाएगा भीखू।"

बापू तो आंख ही नहीं खोल रहा है।"

है इसलिए...अच्छा अब एक काम और करना

ो जानती है ? जिसके पास बैलगाड़ी है..."

ाना होगा...फौरन आ जाए, कहना मैंने बुलाया
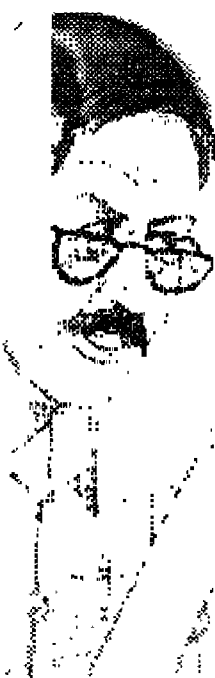
"क्यों काका ?" अब उसने
पूछा।

ंसकर डॉक्टर बोले, "अरे
घर नहीं ले जाना है
पैदल कैसे जाएगा ?"

"ओ हां..." हंसकर
राजेश्वरी पलटी ही थी कि
डॉक्टर ने पूछा, "तू नमक
भी लाई थी ?"

"हां।"

"तो दे मुझे और पानी का लोट

भी कहकर अपने बेग मे रखी चीनी की पुडिया निकाली नमक चीनी का घोल बनाकर जब तक उन्होने भीखू को पिलाया, छोटी-सी राजेश्वरी खेतों को लांघती-फांदती गांव पहुंच रही थी।

जब शारदा बैलगाड़ी पर राजेश्वरी को बैठा कर खेत पर पहुंचा, दूसरे किसान भी लौट आए थे। डॉक्टर किशोर ने भीखू को सबकी मदद से बैलगाड़ी पर लिटा कर कहा, "घर जाकर आराम करो और नमक-चीनी का यह घोल पी लेना...मैं मुखियाजी को बता कर अभी आता हूं।"

मुखियाजी बड़े दयालू स्वभाव के थे। सारी बात सुनकर खुद ही भीखू के घर पहुंच गए। पीला पड़ा कमजोर चेहरा देख डॉक्टर से बोले, "डॉक्टर, बड़ा कमजोर लग रहा है कोई बड़ी बीमारी तो नहीं है ?"

"नहीं, गरीब की बीमारी तो गरीबी ही है। भूखा था सो लू लग गई है। सूई लगा दी है...देखता हूं अगर ग्लूकोज चढ़ा सका तो जल्दी ठीक हो जाएगा वरना दो दिन लग जाएंगे।"

मुखियाजी ने भीखू के पिता के हाथ पर पैसे रखते हुए कहा, "चिरौंजीलाल ये भीखू की आज की मजदूरी है रख लो।"

"पर मालिक, मैं तो कुछ कर ही नहीं पाया..." चारपाई पर पड़ा भीखू बोला।

"पर बीमार तो तुम मेरा काम करते समय पड़े हो तुम्हारा इलाज मैं ही करवाऊंगा। अब चुपचाप लेटे रहो और जैसा डॉक्टर कहे वैसा ही करो।...अरे रज्जो...कहां गई तू ?"

बाबा मे यहा हू ’

“तू तो बड़ी होशियार हो गई है...शारदा को सुना हाट से पकड़ लाई है।”

शरमा गई राजेश्वरी। मुखिया उसके माथे पर हाथ फेरकर और फिर से सबको सहेज कर लौट गए।

शाम को भीखू को देखकर लौटते वक्त डॉक्टर किशोर मुखिया के चौपाल में आए। सबने भीखू का हाल पूछा और उसके प्रति हमदर्दी जताने लगे तो डॉक्टर ने कहा, “मुखियाजी, मेरी आपसे विनती है कि उसकी पत्नी को दो-चार दिन अपने खलिहान पर काम करने के लिए बुला लीजिए। ऐसे दी मदद वह लेंगे नहीं...आत्मसम्मानी बहुत हैं...”

“हां-हां...हो जाएगा...आज रात ही लखन जाकर कह आएगा। और बिरजू तुम क्यों नहीं चिरौंजीलाल को अपने खेत की रखवाली के लिए रख लेते हो ? तुम्हें तो आदमी की तलाश है न ?”

बिरजू बोले, “करेगा काम ?...वह तो बीमार रहता है।”

“अरे आजकल तो ठीक ही है...रख लो न।” मुखिया बोले। भला उनकी बात टाल सके इतनी हिम्मत किसमें थी।

बिरजू ने कहा, “ठीक है...कल ही उसे बुलवा लूंगा।”

डॉक्टर बोले, “मुझे एक बात और कहनी है।”

“कहिए-कहिए...” कई लोग बोल उठे।

डॉक्टर ने मुखिया की ओर देखकर कहा, “मैं एक स्कूल खोलना चाहता हूं। इस गांव में यूं तो कई चीजों की कमी है

पर अभी तो स्कूल को ही नंबर एक मानना है
गांव से कुल पंद्रह-बीस या हो सकता है पचीस-त
पढ़ने जाते हैं। उनसे कहीं ज्यादा बच्चे यहां धन
दिन-रात या तो खेलते हैं या मां-बाप के साथ व
इन बच्चों के साथ बड़ा अन्याय हो रहा है।"

डॉक्टर की बात का सबने समर्थन किया।

डॉक्टर किशोर का हाथ पकड़ लिया।

बोले, "इन तीन-चार सालों में आपने तो हम सबको जीत लिया है। हमारे लिए तो आप भगवान हैं। मुझे दुःख है कि स्कूल खोलने का ख्याल हमें पहले क्यों नहीं आया।...आप ठीक कहते हैं गांव में स्कूल जरूर खुलेगा..."

सबने ताली बजा कर इस बात का जोर-शोर से समर्थन किया।

डॉक्टर बोले, "अभी भीखू के घर पर जब बैठा था तो मेरे सामने रज्जो भीखू से कहने लगी, "बापू, मैं भी काका की तरह डॉक्टर बनूंगी...तब तू कभी बीमार नहीं पड़ेगा।" सुनकर मेरा दिल भर आया। हमें इन गरीबों की नई पीढ़ी के लिए कुछ करना चाहिए।"

मुखिया बोले, "कल ही अच्छा कल नहीं परसों ही, मेरे बैठक के सामने वाले बरामदे में स्कूल खुलेगा। परसों का दिन अच्छा है। कल हम घरों में कहलवा देंगे...और हां स्कूल में मास्टर भी तो चाहिए...पढ़ाएगा कौन ?

"उसका हल मेरे पास है।" डॉक्टर ने कहा, "मेरे पिताजी जीवन भर खागा के एक स्कूल में पढ़ाते रहे थे। वह मेरे साथ रहते हैं...वह पढ़ाएंगे।"

"ये तो बड़ी अच्छी बात है।"

महाजन बनवारीजी भी वहां मौजूद थे। बोले, "तो मेरी तरफ से सारे बच्चों को कॉपी किताब, रबर पेंसिल और जो भी चाहिए दिया जाएगा। इन सारी चीजों का खर्च मेरा।"

पंडितजी पीछे बैठे-बैठे मुस्करा रहे थे। अब बोले, "तो

एक पुण्य मैं भी क्यों न कमा लूं। मेरी जो जमीन तालाब के पास वाली खाली पड़ी है उसे मैं स्कूल के लिए देता हूं।"

"अरे पंडितजी...वह तो बड़ी अच्छी जमीन है।"

"तभी तो पुण्य कार्य में दान कर रहा हूं। डॉक्टर जरा पता करिए कि जमीन स्कूल के लिए दान करने के लिए क्या-क्या करना पड़ेगा।"

भट्ठे के ठेकेदार बदरू मियां भी बोल पड़े, "स्कूल बनाने में, याने कि इमारत खड़ी करने के लिए मेरी तरफ से ईंटें मुफ्त... ।"

"अरे वाह ! जब हम लोग आज इतना कुछ सोच सके तो पहले क्यों नहीं स्कूल खोलने का विचार हमारे मन में आया ?" मुखिया जी खुश होकर और कुछ आश्चर्य से बोले।

"इसकी जिम्मेदारी है डॉक्टर की। आज उन्हें राजेश्वरी ने अपनी बातों से भीतर तक झकझोर डाला है और तभी स्कूल खोलने का ख्याल भी आया।" बनवारी जी बोले।

बदरू मियां हंसकर बोले, "देर आए दुरुस्त आए...परसों स्कूल खुलेगा...हमारे पास बहुत काम है...कल सारे बच्चों को सहेजना है...उठिए अब सब लोग घर जाइए..." कहते हुए वे उठ खड़े हुए। पंडितजी बोले, "देख लेना, एक दिन ये स्कूल बड़ा नाम करेगा।"

डॉक्टर उठते हुए हंसकर बोले, "पर अभी तो राजेश्वरी का ही हम नाम लेंगे...उसी ने मेरी आंखें खोल दीं।"

वहां उपस्थित सारे लोग बहुत खुश थे। आज मथुरापुरा गांव ने एक और कदम बढ़ाया था।

बुरी लत

अर्द्धवार्षिक परीक्षा शुरू होने वाली थी। नौ वर्ष की कुहू कविता याद कर रही थी। उसी कमरे में उसकी मम्मी जवा बैठी कुहू की नई फ्राक में बटन टांक रही थी। कविता याद होते हुए कुहू जवा को सुना देती थी।

एकाएक जवा ने देखा कि कविता की कॉपी का एक कोना फाड़कर कुहू ने मुंह में भर लिया है।

वह बोली, "कुहू ये क्या ? तुमने कागज मुंह में भरा है ?"

"ओह मां, गलती हो गई। सॉरी लो निकाल दिया।" उसने मुंह से कागज निकालकर डस्टबीन में डाल दिया।

लेकिन जवा इससे संतुष्ट नहीं हुई। वह असंतुष्ट होकर बोली, "इधर कुछ दिनों से मैं देख रही हूं कि तुम हर तरह की चीजें उठाकर मुंह में भर लेती हो। क्या यह अच्छी बात है ? अब तुम क्लास फाइव में पढ़ रही हो, अपनी विज्ञान की किताब में पढ़ा होगा कि गंदी चीजें बीमारी फैलाती हैं।"

"पर मम्मी, कॉपी का कागज गंदा कहां है ?"

गुस्सा आ गया जवा को, "एक तो तुम गलत काम करती हो, उस पर बहस कर रही हो ? जिस कागज को हर समय छू रही हो वह साफ नहीं है। दूसरी बात कागज क्या खाने की चीज है ?"

"अच्छा मां अब मैं कभी ऐसा नहीं करूंगी,
." हंसकर कुहू जवा के गले से लिपट गई।

करने पर भी बुरी आदत एक बार पड़ ज
है। कुहू को भी आदत पड़ गई थी कि खेल
मिला तो फ्राक का कोना ही उठाकर चबाने
हर फ्राक का कॉलर दांतों से चबाया हुआ है
ाज खाएगी बाल बंधवाते वक्त कंघी उठाकर

एक दिन स्कूल बग का स्ट्रेप चबाती घर चली आइ

एक दिन भइया संकल्प ने उसके मुंह से कोल्ड ड्रिंक की शीशी का ढक्कन निकलवाया। उस दिन पापा ने मारा भी। कुहू ने कान पकड़ा और फिर कभी ऐसा न करने का वचन दिया। लेकिन शाम तक वह अपना वचन भूल गई।

सबकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि अचानक इधर दो तीन महीने से कुहू ने सारी अच्छी आदतें क्यों छोड़ दी हैं ? प्यार से समझाने अथवा डांटने मारने से भी कुहू पर कोई असर नहीं पड़ रहा है। बल्कि उसके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ रहा था। उसे अब भूख कम लगने लगी थी। उसे पहले जैसा खाने में स्वाद नहीं मिलता था।

चिंतित जवा एक दिन स्कूल गई। वह उसकी टीचर से मिली और कुहू की गंदी आदतों की चर्चा करते हुए सलाह मांगी। टीचर ने बताया कि कुहू के पास बैठने वाली लड़की सुरभि में भी इस तरह की आदतें हैं। कुहू ने उसी से यह सब सीखा होगा। वह लड़की भी दिन-रात मुंह में कुछ न कुछ भरती रहती है। रूमाल का कोना, पेंसिल का सिरा, रबर का टुकड़ा, बाल, कागज और भी न जाने क्या-क्या ? टीचर खुद उससे परेशान हैं। उसके अभिभावकों को भी बुलाकर चेतावनी दे चुकी परंतु कोई असर नहीं हुआ है। स्वयं सजा देती रहती हैं परंतु फायदा नहीं हुआ है।

जवा ने टीचर से अनुरोध किया कि कुहू को इस तरह की हरकतों के लिए टोके। जरूरत पड़े तो डांटे भी। साथ ही सुरभि के पास न बैठाएं।

परंतु सुरभि से दूर बैठाए जाने पर भी कु
दत नहीं छोडी

घर मे हर किसी के लिए एक काम बढ़ गया . जब कुहू इस तरह की कोई बात करती संकल्प उसे टोकता, पापा डांटते, मां नाराज होती।

असल में कुहू अपनी गंदी आदत छोड़ना तो चाहती थी किंतु या तो भूल जाती थी या लालच में पड़कर फिर गलती कर बैठती थी।

जवा ने निजी डॉक्टर से सलाह करके हर रोज रात को कुहू को कहानियां सुनानी शुरू की। उन कहानियों से बच्चे गंदी आदतों के कारण टीचर से मार खाते थे, होमवर्क न करने के कारण क्लास में पढ़ाई में पिछड़े रहते थे, बीमार पड़ते थे, जल्दी बाल झड़ गए थे, बहरे हो गए थे, आंखें कमजोर पड़ गई थीं।

सुनकर कुहू के रोंगटे खड़े हो जाते थे। वह सोचती अगर मैंने गंदी आदतें न छोड़ी तो मैं भी अंधी, गूंगी, बहरी हो सकती हूं। मम्मी से तरह-तरह के प्रश्न पूछती सुबह होते ही वह सब कुछ भूलकर फ्राक का कॉलर चबाने बैठ जाती।

कहानियों का असर न होते देख जवा ने कुहू से बोलना बंद कर दिया। इतनी बड़ी सजा के लिए कुहू तैयार न थी : रोते हुए उसने वादा किया कि अब कभी वह गंदी चीजें मुंह में नहीं डालेगी।

संकल्प और पापा ने सारे दिन कुहू पर नजर रखी . सचमुच उस दिन कुहू ने कोई गंदा काम नहीं किया। खुश होकर शाम को पापा ने आइसक्रीम खिला दी। रात को खाना परोसते वक्त जवा ने भी बात की तो कुहू का डर दूर हो गया

अपना वादा भी वह फौरन भूल गइ।

एक दिन स्कूल में एक डॉक्टर बुलाए गए जिन्होंने बच्चों को सफाई स्वास्थ्य इत्यादि पर जरूरी बातें बताई। उन्होंने कहा कि सिर्फ नहाकर शरीर को साफ करने से कुछ नहीं होता जब तक शरीर के भीतर की सफाई न की जाए। स्वच्छ, ताजी ढकी चीजें खानी चाहिए। इधर-उधर की हर चीज खाने से बीमार पड़ने का डर रहता है।

डॉक्टर साहब की बातें सुनकर कुहू को मम्मी-पापा की कही बातें याद आ गई। उसने अपने आपसे कहा, "आज से गंदे काम बंद" लेकिन जहां स्कूल से लौटते वक्त बस्ता गोद में रखा वहीं हाथों से स्ट्रैप उठाकर मुंह में भर लिया।

रात को खाना खाते वक्त हल्का-हल्का पेट में दर्द हो रहा था परंतु उसने परवाह नहीं की। किसी से बताया भी नहीं। लेकिन आधे घंटे में दर्द बढ़कर असहनीय हो गया तो चीखने लगी। पेट पकड़कर हाय-हाय करने लगी तो सभी को चिंता हो गई। पापा ने फौरन परिवार के निजी डॉक्टर को फोन करके बुला लिया।

उनके आते-आते कुहू ने दो उल्टियां कीं और पस्त पड़ गई।

मम्मी पापा के मुंह से सारा हाल सुनकर डॉक्टर साहब ने आला निकाला और शरीर की जांच करने लगे। अंगुली से दबा-दबा कर पेट की टोह ली। उनका पेट दबाना था कि कुहू जोर से चीख उठी

डॉक्टर साहब ने पूछा, तुम्हारे पेट के किस भाग मे दद ो रहा है ? यहां ?" कहकर उन्होंने एक स्थान को दबाया।

कुहू ने उनका हाथ पकड़ लिया और कराहते हुए बोली, 'पूरे पेट में।"

"तुमने क्या-क्या खाया था ?" डॉक्टर साहब ने गंभीर ोकर पूछा।

कुहू ने याचनापूर्ण दृष्टि से मम्मी को देखा जैसे कह रही ो "तुम बता दो।" परंतु जवा कुछ नहीं बोली। उन्हें पूरा वेश्वास था कि आज की बीमारी का कारण कुहू का गंदी वीजों को खाना और चबाना है।

डॉक्टर साहब ने दोबारा पुचकारते हुए पूछा, "याद करके बताओ कुहू—तभी तो मैं सही दवा दे सकूंगा।"

पेट पकड़कर कुहू बोली, "दाल सब्जी रोटी...जो मम्मी ने बनाया था।"

"बस ? और कुछ नहीं ?" डॉक्टर साहब ने उसके बालों पर हाथ फेरा।

"नहीं, शाम को फल खाया था।"

"और ? याद करो", कहकर डॉक्टर साहब ने अर्थभरी दृष्टि मम्मी-पापा पर डाली।

दर्द से छटपटा कर कुहू ने गर्दन हिलाकर इंकार किया।

डॉक्टर साहब ने मम्मी की ओर देखा, "आप ही मेरी मदद कीजिए अगर इधर-उधर की चीज खाई हो तो बताइए।"

भारी आवाज में जवा बोली, "अब आपसे क्या छिपाऊं डाक्टर साहब ? कुहू अच्छी बुरी गदी हो या मैली हर चीज

ऽ में भर लेती है। चमड़े की बेल्ट, बैग का स्ट्रेप,
ॉलर, पेंसिल कलम का सिरा, रबर, कागज, कपड़े—सब
त और कबाड़ इस लड़की के पेट में भरा हुआ है।
में दर्द न होगा तो और किसके होगा ?"
: साहब को तो पहले भी जवा सब कुछ बता ही
उन्हें सब कुछ मालूम था परंतु इस समय वे अनजान
। आश्चर्य प्रकट करते हुए कुहू से बोले, "क्या मम्मी
ही हैं ?"
व्याकुल कुहू को जल्दी ठीक होने की चिंता हो रही
र बोली, "हां।"

तभी तो पूरे पेट मे दद हो रहा है देखा बेटी यह तो बड़ी बुरी बात है। मैं भी यही सोच रहा था कि जो खाना तुमने बताया था उसे खाकर तो कोई बीमार पड़ नहीं सकता, फिर तुम क्यों बीमार पड़ी ? तुम्हें पता है चमड़ा कितनी गंदी चीज है ? मरे हुए पशुओं के चमड़े से ये सब चीजें बनती हैं जिन्हें तुम चबाती हो। न जाने कितने हजार कीड़े तुमने खा लिए होंगे अगर हर चीज खाने के लिए होती तो भला मम्मी मना करती ?"

रो पड़ी कुहू, "अब क्या होगा ? मैं मर जाऊंगी ?"

डॉक्टर साहब मुस्कराए, "मरने की बात कौन कर रहा है ? मैं एक सुई लगाऊंगा जिसमें कीड़े मारने की दवा भरकर शरीर में डाल दूंगा। लेकिन तुम्हें एक वचन देना पड़ेगा—आज

से कभी कोइ चीज जो खाने की न हो मुह मे नही डालोगी वरना मुझे पेट काटकर पेट की गदगी साफ करनी पड़ेगी।

सुनकर कुहू का रोना बढ़ गया, "नहीं मेरा पेट मत काटिए। मैं पक्का वचन देती हूं कि मम्मी के दिए खाने के अलावा कभी कुछ नहीं खाऊंगी।"

"ठीक है। अब आंसू पोंछो। इस सुई के लगते ही तुम्हारा दर्द गायब हो जाएगा। इसे लगवाकर सो जाना।"

उस दिन के बाद से कुहू ने सचमुच सारी गंदी आदतें छोड़ दीं। उसे पेट कटवाने की बात से इतना डर लगा कि सारी बुरी लत अपने आप छूट गई।

पापा का सुझाव

ा परोसते हुए आवाज लगाई, "बच्चो, खाना ल
" वह मेज पर सारी चीजें तरतीब से सजा चुव
स लगा रही थीं जब देवेंद्र बच्चों के पिता, डाइनिं

ा। जानकी से बोले, "मैना को कहो न कि थाल
वगैरह लाए। अकेले क्यों लगी हुई हो ?"

ता रही हू लेकिन कोई आया ही नही ' वह चाके
।

ने पुकारा, "मैना ! मैना बेटी आओ। मुदित और
भी बुलाओ।"

, पांच मिनट में आती हूं।"

या रही हो ? एक बज रहे हैं बेटा ? मुदित...मृदुल...।"

वाब नहीं आया तो जानकी के लाए बर्तनों को खुद ही
खते हुए बोले, "लड़के कहां हैं ? नहा रहे हैं क्या ?"

पहले नहा-धो चुके हैं, छत पर होंगे ?"

पर ? इस वक्त ? जाकर देखूं क्या ?"

कल कुछ महीनों से ये लोग बदल से गए हैं। जब
कमरे में घुसे रहते हैं...खेलकूद भी बंद हो गया है।
बंटाना दूर अपने काम भी नहीं करते हैं। जबकि

पहले अपना अपना काम कितने सलीके स करत थे

हंसकर देवेंद्र बोले, "चंदू की शादी में सभी लोग बच्चों की कितनी तारीफ कर रहे थे ? इतने गुणी और चौकस...हर वक्त अपनी चीजों पर ध्यान रखना, कमरा बंद रखना, हमें तो देखना ही नहीं पड़ा था।"

"हां, अब तो उसमें भी लापरवाही बरतते देखती हूं। जाने क्या: तीनों में खुसुर-फुसुर होती रहती है।"

"पर मैं तो जब भी देखता हूं पढ़ते रहते हैं ?"

"तो रिजल्ट क्यों खराब हुआ ? पढ़ने वाले का रिजल्ट तो अच्छा होता है न ?"

"तो फिर क्या ये लोग कोर्स की पढ़ाई कम करते हैं ?" देवेंद्र चिंतित होकर बोले। फिर उन्होंने ऊंची आवाज में पुकारा, "क्यों बच्चो, खाना खाना है या नहीं ? हम लोग खाना खाने जा रहे हैं।"

और सचमुच जानकी ने दो कटोरियों में दाल परोस लिया। सब्जी परोसने के लिए चम्मच उठाया था कि मृदुल प्रकट हुए और सिर झुकाए कुर्सी पर बैठ गए।

देवेंद्र ने रुष्ट दृष्टि उस पर डाली, "वे दोनों कहां रह गए ?"

अपनी थाली सामने खींचते हुए मृदुल ने उत्तर दिया, "आ रहे हैं।"

मैना दौड़ती हुई आई और पापा के बगल में रखी कुर्सी पर बैठ गई।

' मम्मी, मुझे भी परोसो, भूख लगी है

ड़ी देर पहले तक तो नही लगी थी बुलाने पर आ
रही थीं ? जानकी सचमुच नाराज थीं।"
समझाते हुए बोले, "देखो बेटा, जब मम्मी बुलाए तो
लिया करो। अकेली काम करती रहती हैं, मदद की
ड़ ही सकती है, है न ?"
ने धीरे से सिर हिलाकर हामी भरी। जानकी ने कहा,
कम थाली कटोरी रख सकती हो। नींबू, नमक मेज पर
नी गिलासों में डालना जैसे छोटे-छोटे काम कर देने से
द मिल जाती है। और फिर हफ्ते में एक इतवार के दिन
छुट्टी के दिन...बाकी दिनों में तो मैं अकेली ही रहती हूं।"

तभी मुदित जो सबसे बडा है हाथ मे एक किताब लिए आया और कुर्सी सरकाते हुए बोला, "सॉरी..."

देवेंद्र ने पूछा, "किस बात की ? भई तुम लोग तो मनमानी करने के लिए आजाद हो फिर कैसी सॉरी ?"

मुदित समझ गया, मम्मी पापा गुस्से में हैं। धीरे से बोला, "मुझे आने में देर हो गई स्टोरी बुक पढ़ रहा था।"

तेरह साल के लड़के को डांटना देवेंद्र को अनुचित लगा। बोले, "खाने के बाद पढ़ लेते। छुट्टी के दिन तो हम सब साथ खाते हैं, गपशप करते हैं...है न ?"

तब तक सब कुछ भूलकर मैना चहक उठी "मम्मी, ये तो मेरी फेवरिट डिश है, मुझे ज्यादा परसो।"

मृदुल ढक्कन उठा उठाकर सारे डोंगे चेक करके बोला, "आज तो स्वीट डिश मेरे पसंद की है...मीठी सेवइयां।"

जानकी का गुस्सा शांत हो चुका था। बच्चों को खाना परोसने लगीं।

देवेंद्र बातें कर करके बच्चों को हंसाते रहे। मुदित ने बताया कि उसकी किताब इतनी इंटरेस्टिंग है कि पूरी पढ़े बिना चैन नहीं।"

"कल न पापा, भइया बुक लेकर बाथरूम में घुस गया था।" मैना शरारतन बोली।

"और पूरे एक घंटे तक नहीं निकला। मम्मी कल भी खूब बुला रही थीं।" मृदुल ने कहा तो मुदित ने उसे आंखें तरेर कर देखा।

"तो आप वहां छिपे थे ? मैंने सोचा खेलने गए हैं।" जानकी बिगड़ी।

"क्या करता...आप तभी काम सोच लेती हैं जब हम पढते हैं।"

"ता काम कोन करेगा ? मै स्कूल की पढ़ाइ के वक्त तो कभी नहीं बुलाती हूं।"

"मुझे ये बुक कल लौटानी है पापा।" मुदित ने रुआंसी आवाज में पापा की ओर देखकर कहा तो मृदुल ने एक और खबर परोस दी, "पापा कल भइया को मैथ्स टीचर ने क्लास से निकाल दिया था..."

"क्यों ?" मम्मी पापा दोनों चौंके।

"इन्होंने मैथ्स का होमवर्क नहीं किया था, स्टोरी बुक पढ़ रहे थे...," मैना ने कुछ गांठें और खोल दी।

"क्या मैना सच कह रही है मुदित ?"

"जी।"

"ये स्टोरी बुक तुम कहां से लाते हो ?"

"डी. ब्लाक में यादव आंटी हैं न, उन्होंने प्रदीप भइया की किताबों से एक लाइब्रेरी खोली है...वह सिर्फ दो दिन के लिए बुक्स देती हैं।"

"चंदा नहीं लेती हैं ?"

"सिर्फ आठ आने।"

"तुम दोनों भी उसके मेम्बर हो ?" देवेंद्र ने मैना और मृदुल को देखा।

"हां। हमारे बहुत सारे फ्रेंड्स भी।"

"देखो, स्टोरी बुक्स पढ़ना अच्छी हॉबी है लेकिन स्कूल की पढ़ाई का नुकसान करके नहीं।"

"क्या करें पापा, आंटी न लौटाने पर एक रुपया फाइन लगा देती हैं "

मुदित ने मुरझाई आवाज में कहा तो देवेंद्र को हंसी आ गई। उन्होंने हाथ बढ़ाकर प्यार से उसकी पीठ थपथपाई। फिर बोले, "तुम इसी बुक को लौटाने के बाद दोबारा इश्यू करवा लिया करो न, तब पढ़ने के लिए दो दिन और मिल जायेंगे।"

चमक उठी उसकी आंखें, "ओ पापा ये तो मैंने सोचा ही नहीं था।"

: पढ़ाई जब करो पूरे ध्यान से करो। स्कूल की में दुःख होता है बच्चो।"

ा खाते हुए बोले, "देखो बेटा, पढ़ाई लिखाई । इसके, बिना तो गुजारा ही नहीं है। इसलिए ेना चाहिये पहले पढ़ाई फिर कहानी। हर दिन रिलैक्स करने के लिए जरूर कहानी की बुक्स डेज में सुबह शाम स्कूल की पढ़ाई ही करो।"

पापा।"

ा नहीं होगा पापा।" मुदित ने कहा।

ब मृदुल यह बताओ मम्मी ने तुम्हारी पसंददीद ई है ? थोड़ी सी मुझे मिलेगी क्या ?" पापा के

प्यार भरे शब्दो ने बच्चो को अपराधबोध से मुक्त कर दिया

उस दिन जूठे बर्तन समेटने में मैना और मृदुल ने जानकी का हाथ बंटाया। मुदित ने मेज पोंछी, कुर्सियां ठीक से रखीं, पंखा बत्ती बंद की तो सबको बड़ा अच्छा लगा।

देवेंद्र बच्चों के कमरे में आकर कुर्सी पर बैठ गये और मुदित की स्टोरी बुक के पन्ने उलटने लगे। मुदित ने ठीक ही कहा था, किताबें सचमुच इंटरेस्टिंग थीं।

"हां। मुझे याद है, तुम्हारी उम्र का था तब। हम लोग पढ़ते थे ब्लेक और कैप्टन स्मिथ की कहानियां। पर हमारे मां बाबूजी की पैनी दृष्टि के कारण इतना कहां पढ़ पाते थे। जानते हो, सोने से पहले एक घंटा हमें कहानी की किताबें पढ़ने का समय मिलता था, तब खाट के सिरहाने टेबिल लैंप लगा कर हम लोग पढ़ते थे।"

"बस एक घंटा ?" मृदुल ने पूछा।

"हां। क्योंकि हमें खेलने का शौक था, स्कूल से लौटकर पार्क में खेलने चले जाते थे। शाम को फ्रेश होकर होमवर्क करते, खा पीकर तब कहानी पढ़ते थे। सुबह मां ही किताब उठाती थी और वह ही रात को हमारे बेड पर रख देती थीं। "देवेंद्र मुस्कराकर बोले।

इसके बाद ही उन्हें कुछ याद आया बोले, "ये बताओ, हमने तुम्हें बर्थ-डे पर न्यू-ईयर पर जो स्टोरी बुक्स दी है वह सब कहां गई ?" उन्हें क्यों नहीं पढ़ते हो ?"

"वह तो सब पढी किताबें हैं।"

तुम भी तो अपनी एक लाइब्रेरी बना सकते हो एक आलमारी में उन्हें ठीक से कैटलॉग बनाकर रखो।"

मृदुल ने मुंह लटकाकर कहा, "पापा बहुत थोड़ी-सी किताबें हैं।"

"अरे भाई...हम देते रहेंगे और तुम भी अपनी पॉकेटमनी से एक आध किताब खरीदो, तो धीरे-धीरे बढ़ जायेंगी।" पापा बोले।

"पापा, हम थ्रिलर खरीदेंगे।"

"नहीं जासूसी।"

"पापा मुझे इडन ब्राइटन की बुक्स लेनी है।"

"तुम तीनों अपनी पसंद की खरीदोगे और मैं तुम्हारी पसंद की किताबें हर दूसरे महीने खरीद दूंगा।"

"वाह...मजा आ जायेगा।" मैना बोली।

तभी जानकी भी आ गई, "किस बात का मजा आ जायेगा, मुझे भी तो बताओ।"

"मम्मी, हम अपनी लाइब्रेरी बनायेंगे।"

"तो तुम्हें एक शीशे की आलमारी दे दूंगी और उधर जो लॉबी खाली पड़ी है वहीं तुम्हारी लाइब्रेरी बनवा दूंगी। एक मेज और चार कुर्सियां, बहुत बढ़िया हो जायेगी।"

"नहीं मम्मी एक मेज नहीं, भइया लोग मुझे बैठने नहीं देंगे।" नौ साल की मैना बोली।

"अच्छा मैं तुम्हें प्लास्टिक वाली कुर्सी मेजें खरीद दूंगा... ठीक।"

"हां पापा।" एक साथ तीनों उछल पड़े।
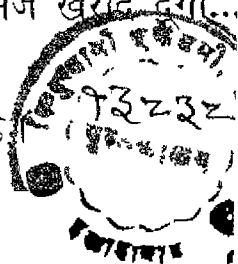
पर हमारी भी एक बात तुम्हे माननी पडेगी तीनो का चेहरा पापा की इस बात पर उतर गया, "कौन सी बात ?"

"हां..."

हंसकर देवेंद्र खड़े हो गये, "तो आज छुट्टी है स्टोरी बुक पढ़ो। हम तुम्हारी लाइब्रेरी का प्लॉन बनाते हैं।"

"वी लव यू पापा।"

"थैंक्यू।" देवेंद्र मुस्कराते हुए बाहर चले आये।

●●●